विचार बिन्दु

कर्मों की आवाज़ शब्दों से ऊंची होती है। –कहावत

असहमति की अभिव्यक्ति और लोक व्यवहार की मर्यादा

सहमति-असहमति सदा से हमारे सोच का हिस्सा रही है। मनुष्य एक विचारशील प्राणी है और वह अपने सामने आने वाले बहुत सारे मुद्दों पर न केवल विचार करता है, उन विचारों को अभिव्यक्त भी करता है। लेकिन उस अभिव्यक्ति की टाइमिंग को लेकर पहले अधिक सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। अब पड़ने लगी है। शायद इसका एक कारण यह भी है कि आज का समय सोशल मीडिया का है और हर किसी के पास अपनी बात कहने के अनेक माध्यम मौज़ूद हैं। लोग इन माध्यमों का उपयोग भी खूब करते हैं। इन माध्यमों के प्रचुर उपयोग की वजह से ऐसी अनेक बातें जो पहले बहुत छोटे समूहों तक सीमित रह जाया करती थीं, अब सार्वजनिक होकर बहुत बड़े समुदाय तक पहुंचने लगी है। ऐसा नहीं है कि पहले असहमतियां नहीं होती थीं। पहले भी लोग असहमत होते थे लेकिन तब कोई एक कहता था और कोई दूसरा उससे असहमत हो जाता था। बात दोनों तक सीमित रहती थी। अब कोई एक कुछ कहता है और फिर अन्य कुछ लोग उससे असहमत होते हैं तो उनका यह संवाद काफी बड़े समुदाय तक पहुंच जाता है और फिर जो लोग मूलतः उस संवाद में शामिल नहीं वे भी उनके उस संवाद के बीच कूद पड़ते हैं। इस तरह जो असहमति बहुत सीमित थी, वह न केवल व्यापक हो जाती है, उसमें काफी नमक-मिर्च भी लग जाता है।

हाल में हुई हास्य कलाकार राजू श्रीवास्तव की मृत्यु के कारण इन बातों की तरफ मेरा ध्यान गया। उन्होंने बहुत सामान्य पृष्ठभूमि से अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ की और जो काम वे करते थे उसमें बहुत ऊपर तक पहुंचे। उन्हें अपार लोकप्रियता प्राप्त थी और देश में व देश से बाहर भी उनकी कला के अनगिनत प्रशंसक थे। स्वाभाविक ही है कि उनकी मृत्यु के समाचार ने इन प्रशंसकों को व्यथित किया। अब होता यह है कि जब कोई व्यक्ति किसी भी कारण से सार्वजनिक क्षेत्र में होता है तो लोग अनेक तरह से उसका मूल्यांकन करते हैं। सबसे पहले तो कला की दुनिया ही इतनी विविधता भरी है और उसे देखने-सराहने की इतनी दृष्टियां हैं कि वहां मतैक्य सम्भव नहीं होता है। आप किसी भी कला रूप को ले लें, जितने उसके सराहने वाले मिलेंगे उतने ही उसे नापसंद करने वाले भी मिलेंगे। ऐसा लोकप्रिय कलाओं के मामले में होता है और शास्त्रीय कलाओं के मामले में भी। पारम्परिक कलाओं के साथ भी यही होता है और आधुनिक कलाओं के साथ भी। नापसंदगी तो इस हद तक होती है कि कुछ लोग उसे कला ही नहीं मानते हैं। ऐसा कोई कलाकार आपको ढूंढे से भी नहीं मिलेगा जिसे सब पसंद करते हों, या जिसे सब नापसंद करते हों। कलाओं की खूबसूरती भी यही है कि सब उन्हें अपने-अपने नज़रिये से देखते-आंकते हैं। ऐसे में यह कभी सम्भव नहीं हो सकता कि किसी कलाकार को सभी लोग पसंद करें।

इसमें और अनेक बातें जुड़ जाती हैं। जैसे कलाकार का वैचारिक पक्ष। किसी विचारधारा विशेष से उसका जुड़ाव। किसी राजनीतिक दल से उसकी संलग्नता। ऐसा पहले भी होता था, अब भी होता है। आखिर कलाकार भी एक इंसान है और उसे भी अपना पक्ष, अपना आदर्श, अपना ठीया चुनने का उतना ही अधिकार है जितना किसी भी और नागरिक को है। वैसे तो बहुत सारी कलाएं ऐसी हैं जिनमें आपकी राजनीतिक संलग्नता अभिव्यक्ति नहीं पाती है, या कम पाती है और उन कलाओं के कलाकारों के संदर्भ में उनकी कला के मूल्यांकन में उनकी वैचारिक निष्ठाओं को बीच में नहीं लाया जाना चाहिए, या बहुत कम लाया जाना चाहिए। अब यही देखिये कि एक पार्श्व गायक वह गाता है जो उसे गाने को दिया जाता है। उसके मूल्यांकन में उसकी राजनीतिक संलग्नता की अहमियत नहीं होनी चाहिए। तब तक नहीं होनी चाहिए जब तक कि वह अपने गानों का चयन राजनीतिक पक्षधरता के आधार पर न करता हो। उसका राजनीतिक मूल्यांकन उसके कला से इतर जीवन के संदर्भ में किया जा सकता है, और किया भी जाना चाहिए। वैसे तो आदर्श स्थिति यही होती है कि कला का मूल्यांकन कला के मानदण्डों के आधार पर किया जाए, लेकिन यह सदा सम्भव नहीं होता है। एक तो इसलिए सम्भव नहीं होता है कि कलाकार की वैचारिकता भी कहीं न कहीं उसके सृजन को प्रभावित करती है और इसलिए भी होता है कि जो उस कलाकार की कला का मूल्यांकन कर रहा है वह कला और विचार को अलग नहीं कर पाता है। बहुत बार कलाकार की कला में उसकी वैचारिकता इतने सूक्ष्म रूप से मौज़ूद होती है कि सामान्य कला-रसिक का तो उस पर ध्यान ही नहीं जाता है। लेकिन जिनका उस पर ध्यान जाता है वे अगर उस कोण से उस कला पर बात करते हैं तो उसे अनुचित नहीं कहा जा सकता है।

किसी दिवंगत के प्रति अप्रिय बात कहने में जल्दबाज़ी नहीं करेंगे तो बेहतर होगा और उसके मूल्यांकन को लेकर उसके प्रशंसकों से विवाद में उलझना तो क़तई उचित नहीं है। जैसे आपको किसी को नापसंद करने का हक़ है वैसे ही किसी अन्य को उसे पसंद करने काभी तो हक़ है। उसके हक़ का सम्मान कीजिए और अपनी निजी स्पेस में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

इन सब बातों से इतर एक अन्य बात लोक व्यवहार की भी है और वर्तमान संदर्भ में वह बात विचारणीय भी है। राजू श्रीवास्तव के निधन पर उनके अनेक प्रशंसकों ने सोशल मीडिया पर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी है। किसी ने केवल उनकी आत्मा को शांति मिले कहकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए तो किसी ने उनकी प्रशंसा में कुछ या बहुत कुछ कहकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित की। मुझे लगता है कि किसी भी दिवंगत के लिए शोक व्यक्त करना हमारी मानवीयता का भी परिचायक होता है और इसे इसी रूप में स्वीकार भी किया जाना चाहिए। लेकिन बहुत बार ऐसा भी होता है कि जो इस दुनिया को छोड़कर गया है उसे किसी भी या किन्हीं भी कारणों से हम पसंद नहीं करते हैं। ये कारण वैचारिक हो सकते हैं, राजनीतिक हो सकते हैं, वैयक्तिक हो सकते हैं, कुछ भी हो सकते हैं। तब हमें क्या करना चाहिए? इस पर अलग-अलग लोगों का सोच अलग-अलग हो सकता है। स्वाभाविक ही है कि मैं अपना सोच सामने रखूंगा।

मेरा सोच यह है कि जिसे हम किसी भी कारण से नापसंद करते हैं, उसके निधन के तुरंत बाद हमें उसके बारे में प्रतिकूल कुछ कहने से बचना चाहिए। इसे आप लोक व्यवहार भी कह सकते हैं और सामाजिक मर्यादा का निर्वाह भी। जिस दिन किसी ने देह त्याग किया, अगर उसी दिन उसका (अपनी नज़र से) सच्चा और खरा मूल्यांकन हमने नहीं कर दिया तो कोई आसमान नहीं गिर पड़ेगा। यह काम महीने दो महीने बाद भी किया जा सकता है। तब आपके मूल्यांकन को लोग भी अधिक सहृदयता से देखेंगे। इसी के साथ दूसरी बात भी। यह दूसरी बात सोशल मीडिया के संदर्भ में है। मुझे यह देखकर बहुत कष्ट होता है कि आजकल यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। मान लीजिए, किसी का निधन हुआ, और मैंने उसको अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उसके बारे में कुछ अच्छी बातें लिख कर पोस्ट कर दीं। आप उस व्यक्ति के प्रशंसक नहीं हैं। आप उसे पसंद नहीं करते, आप उसके आलोचक हैं। क्या आपको मेरी वॉल पर आकर मेरी श्रद्धांजलि का विरोध करते हुए उस दिवंगत के प्रति अपनी बेबाक टिप्पणी करनी चाहिए? मेरा स्पष्ट मत है कि ऐसा करना अनुचित और अवांछित है। अगर आप उसी समय उस व्यक्ति के बारे में कुछ अप्रिय बातें कहना चाहते हैं और अपनी इस इच्छा पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं तो आप अपनी वॉल पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीजिए। मेरी वॉल पर आकर आपको यह करने का कोई अधिकार नहीं है। मेरी वॉल मेरी है, और भले ही वह वॉल एक सोशल मीडिया द्वारा प्रदत्त है, वह इतनी भी सार्वजनिक नहीं है कि हर कोई वहां आकर चाहे जो कह जाए। यहीं हमारी सामाजिक मर्यादा वाली बात आती है, कि सार्वजनिक की भी अपनी सीमाएं होती हैं और हमें उनका सम्मान करना चाहिए। आप यह कहकर कि यह एक सामाजिक माध्यम है, हर कहीं घुस जाएं, इसे उचित नहीं माना जा सकता। सामाजिकता भी निर्बाध और असीम नहीं होती है।

राजू श्रीवास्तव के संदर्भ में बहुत सारे लोग उनके हास्य की प्रकृति को लेकर, उनकी राजनीतिक संलग्नता को लेकर अनेक प्रकार की प्रतिकूल टिप्पणियां कर रहे हैं। प्रतिकूल या अनुकूल टिप्पणी करने का हरेक को हक़ है। यह भी सम्बद्ध व्यक्ति का अधिकार है कि ऐसा करने के लिए वह किस समय का चयन करता है: किसी की मृत्यु के तुरंत बाद में या कुछ ठहर कर। यह भी सही है कि जो चीज़ आज ग़लत है वह एक माह भी ग़लत ही रहेगी। तर्क के लिए यह भी कहा जा सकता है कि ग़लत को ग़लत कहने में कोई संकोच क्यों हो और इस कहने को स्थगित क्यों किया जाए! इस बात को लेकर बहस करने का भी कोई औचित्य नहीं है। मैं तो बस अपनी बात कह रहा हूं कि मुझे यह उपयुक्त लगता है कि किसी दिवंगत के प्रति अप्रिय बात कहने में जल्दबाज़ी नहीं करेंगे तो बेहतर होगा और उसके मूल्यांकन को लेकर उसके प्रशंसकों से विवाद में उलझना तो क़तई उचित नहीं है। जैसे आपको किसी को नापसंद करने का हक़ है वैसे ही किसी अन्य को उसे पसंद करने काभी तो हक़ है। उसके हक़ का सम्मान कीजिए और अपनी निजी स्पेस में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

इस मुद्दे पर आप क्या सोचते हैं?

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अन्तर्राष्ट्रीय क्रिस्टल शिल्पकार वकार हुसैन का नाम 21 सेंचुरी इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज

उदयपुर के अन्तर्राष्ट्रीय क्रिस्टल शिल्पकार वकार हुसैन ने क्रिस्टल पर पांच एम.एम. का विश्व का सबसे छोटा ताजमहल बनाकर अपना नाम 21 सेंचुरी इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज करवाया है। गुरुवार को राजस्थान लघु उद्योग निगम के अध्यक्ष राजीव अरोड़ा ने उन्हें इस अवॉर्ड से सम्मानित किया।

वकार हुसैन ने क्रिस्टल पर एक फीट से लेकर 25 फीट तक के विशाल झूमर एवं सरसों के दाने से लेकर तीन फीट तक की अनेक गणेश प्रतिमाएं बनाई हैं। उन्हें इससे पूर्व भी अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। उन्हें जयपुर रत्न सम्मान समारोह सीजन-तीन राजस्थान समारोह पुरस्कार एवं तेलंगाना रॉयल सक्सेस इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा महाराणा सज्जन सिंह अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें उदयपुर जिले के ब्रांड एंबेसडर अवॉर्ड से भी नवाजा गया है।

वकार हुसैन झाड़ फानूस (झूमर) बनाने के अन्तर्राष्ट्रीय शिल्पकार हैं। उन्होंने एक फीट के झूमर से लेकर 25 फीट तक के विशाल झूमर बनाए हैं। पहले वे एक से दो फीट के 30 से 40 किलो वजनी झूमर बनाते थे। अब 10 से 15 फीट के 7 से 8 क्विंटल वजन के झूमर बनाते हैं। वे झूमर को ऐसा एंटीक लुक देते हैं जैसा पुराने जमाने में राजा महाराजाओं के महलों के झाड़ फानूस में दिया जाता था।

पन्नालाल मेघवाल

उन्होंने 14 फीट लंबा एवं 8 फीट चौड़ा नायाब झूमर बनाया। इस झूमर में 80 शमादान लगाए गए। इन शमादानों में 125 बल्ब लगाए गए। जो मोमबत्ती जैसे जलते हुए दिखाई देते हैं। इस झूमर में सबसे नीचे लगी बॉस्केट 7 फीट की है और इसमें लगभग 4 लाख नग लगे हैं। झूमर का ढांचा स्टील एवं पीतल का बनाया गया। सबसे नीचे स्टील के घेरे में 36 शमादान लगाए गए। यह उनके जीवन का बेहतरीन झूमर बन पड़ा था।

वकार हुसैन ने अब तक देवी-देवताओं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, श्रीनाथजी, शनिदेव, नटराज, बाहुबली, महावीर स्वामी, झूलेलाल, स्वामी नारायण, जीसस क्राइस, मदर मेरी, गुरु नानक, एक ओमकार, कुर्सियां, मेज, बैलगाड़ी, पशु-पक्षी आदि एक से बढ़कर एक सुंदर कृतियां तैयार कर देश ही नहीं विदेश में भी नाम कमाया है।

उन्होंने अलग-अलग साइज के बेशकीमती एवं एंटीक छोटे- बड़े 5 हजार झूमर बनाए हैं। गणपति की सरसों के दाने से लेकर 3 फीट तक की 2500 मुद्राओं की प्रतिमाएं बनाई। उन्हें शत्रु विनाशक गणेश, लक्ष्मी रूपी सिद्धि विनायक, मूषक सवार गणपति, मूषक रथ पर विराजमान गणपति एवं गणपति की बारात प्रतिमाएं बनाने में विशेष महारत हांसिल है।

वकार हुसैन मुस्लिम होने के बावजूद गणेशजी एवं हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियां बनाने में विशेष महारत प्राप्त हैं। वे सांप्रदायिक सद्भाव एवं गंगा जमुनी तहजीब के जबरदस्त हिमायती हैं। वकार हुसैन ने शिल्पांकन में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के प्रतीक चिन्ह बनाकर सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया। इससे प्रसन्न होकर भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, महान संत मुरारी बापू, संत तरुण सागर एवं श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार

10 फीट लंबे अजगर को रैस्क्यू कर जंगल में छोड़ा

देवली, (निसं)। उपखंड क्षेत्र की पनवाड़ पंचायत क्षेत्र के सेंदियावास गांव में रविवार को एक 10 फीट लंबे अजगर का रैस्क्यू किया गया। जिसे स्नेक्स एक्सपोर्ट शादाब अख्तर रिजवी ने सुरक्षित पकड़कर जंगल में छोड़ दिया।

अजगर सांप को रैस्क्यू किया।

■ **अजगर ने नील गाय के बच्चे को बनाया था निवाला**

ग्रामीणों ने बताया कि यह अजगर रेगरान ढाणी के पास बने एनीकट के समीप खेतों में दिखा यहां ग्रामीण महिलाएं फसल काट रहीं थी तभी उन्हें यह अजगर दिखाई दिया। हालांकि इस दरमियान अजगर में हलचल काफी कम थी। इसकी सूचना देवली तहसीलदार तथा वनकर्मियों को दी गई। सूचना मिलने पर वनकर्मी केदार शर्मा मौके पर पहुंचे। वहीं स्नेक एक्सपर्ट शादाब अख्तर रिजवी ने भी वनकर्मियों का रैस्क्यू करने में सहयोग किया। सुरक्षित पकड़े जाने के बाद अजगर को जंगलों में छोड़ दिया गया। ग्रामीणों ने बताया कि अजगर ने एक नील गाय के बच्चे को अपना निवाला बनाया हुआ था।

रैस्क्यू के दौरान नील गाय का बच्चा अजगर के पेट में ही था रैस्क्यू करते वक्त उसने मृत बच्चे को बाहर उगल दिया। इसके बाद वनकर्मियों ने स्नेक एक्सपर्ट रिजवी की सहायता से अजगर को बोरे में बंद कर सुरक्षित जंगलों में छोड़ दिया। इस मौके पर शादाब अख्तर रिजवी ने बताया कि उक्त अज़गर साप इंडियन रॉक पाइथन प्रजाति का था लेकिन विशालकाय अजगर है। यहां अजगर को देखकर ग्रामीणों में कौतूहल का विषय बना रहा।

डांग क्षेत्र में 'बक्सा बैंकों' ने 70 हजार से अधिक महिलाओं का जीवन बदला

धौलपुर, (निसं)। धौलपुर जिले के डांग इलाके का नाम आते ही भले ही आज भी लोगों के जहन में ऊंचे नीचे बीहड़, बागी, बजरी व बंदूक वाली पुरानी तस्वीर बनती हो। लेकिन असल बात ये है कि अब यहां भी समय व शिक्षा के प्रभाव से बहुत कुछ बदल चुका है।

इस बदलाव में मंजरी फाउंडेशन धौलपुर के निदेशक संजय शर्मा, अमित सिंह व संजय शर्मा की टीम एवं महिलाओं की कुछ कर गुजरने की इच्छाशक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। जिस कारण गरीब परिवारों की महिलाओं ने साहूकारों की ब्याज व तानाशाही एवं बैंक की कागजी खानापूर्ति से तंग आकर गांव व शहर में खुद के बक्सा बैंक बना लिए हैं। जिससे कर्ज के लिए महिलाएं अब ना तो साहूकारों के आगे हाथ फैलाती हैं और ना ही बैंक के चक्कर लगाती हैं।

धौलपुर जिले की महिलाओं ने समूह बनाकर वर्ष 2000 से बक्सा बैंक बनाना शुरू किया, आज जिलेभर में इन बख्शा बैंकों की संख्या करीब 5 हजार है। पूर्व में ज्यादातर गांव में लोगों को घर परिवार की जरूरत पूरी करने के लिए पैसों की जरूरत होती थी तो वे साहूकारों के यहां जमीन व गहने गिरवी रखकर अधिक ब्याज पर कर्ज लेते थे, उसके बाद भी साहूकार प्रताड़ित करते थे। वहीं बैंक अधिकारी लोन देने के लिए बैंक के चक्कर लगवाते थे। बक्सा बैंक में उन्हीं महिलाओं को लोन दिया जाता है जो समूह की सदस्य होती हैं। इसके लिए उन्हें न तो कोई कागजी कार्रवाई करनी पड़ती है और ना ही कुछ गिरवी रखना पड़ता है। उम्मीद महिला बचत समिति, रोशनी महिला बचत समिति, संतोषी महिला बचत समिति की महिलाओं ने बताया कि उनको जब भी पैसों की जरूरत होती है तो वह इस बक्शा बैंक से पैसे निकाल कर अपनी जरूरत पूरी कर लेती हैं। समिति की अध्यक्ष अंजुम ने बताया कि उसको अपनी बेटी की शादी करनी थी। बेटी की शादी के लिए उसको पैसों की जरूरत पड़ी तो उसने बक्सा बैंक से ही पैसे निकाल कर अपनी बेटी की शादी की। वहीं रोशनी महिला समिति की अध्यक्ष राजेंद्री ने बताया कि उसको भी अपने बेटा की शादी के लिए पैसों की जरूरत पड़ी तो उसने भी इसी बक्शा बैंक से पैसे निकाल कर बेटे की शादी की।

बक्सा बैंक समूह की बैठक में भाग लेती महिलाएं।

गुरु जम्भेश्वर के सिद्धांत सृष्टि की समस्त सभ्यताओं का निचोड़ : उपराष्ट्रपति

बीकानेर, (कासं)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर महाराज के 120 शब्द और 29 नियम सृष्टि की समस्त सभ्यताओं का निचोड़ हैं। उपराष्ट्रपति धनकड़ ने रविवार को नोखा के मुकाम में गुरु जम्भेश्वर के वार्षिक मेले के दौरान आयोजित धर्म सभा में यह उद्गार व्यक्त किए।

धनकड़ ने कहा कि मुकाम सही मायनों में पर्यावरण का 'मुकाम' है। मुकाम ने पूरी दुनिया को पर्यावरण के संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि दुनिया को यह जानने की आवश्यकता है कि आज से 500 वर्ष पूर्व जब संसाधनों के दुरुपयोग की कल्पना नहीं की जा सकती थी, तब गुरु जम्भेश्वर ने ऐसे नियम दिए जो आज सर्वाधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि गुरु जम्भेश्वर ने सदियों पूर्व पर्यावरण प्रदूषण के खतरे को भांप लिया और जन-जन को सचेत किया। असंयमित दिनचर्या के कारण हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में गुरु जम्भेश्वर के सिद्धांतों का अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने इन सिद्धांतों को 'जीवन दान वाली दवा' बताया और जन कल्याण के मद्देनजर इनका व्यापक प्रचार-प्रसार करने का आव्हान किया।

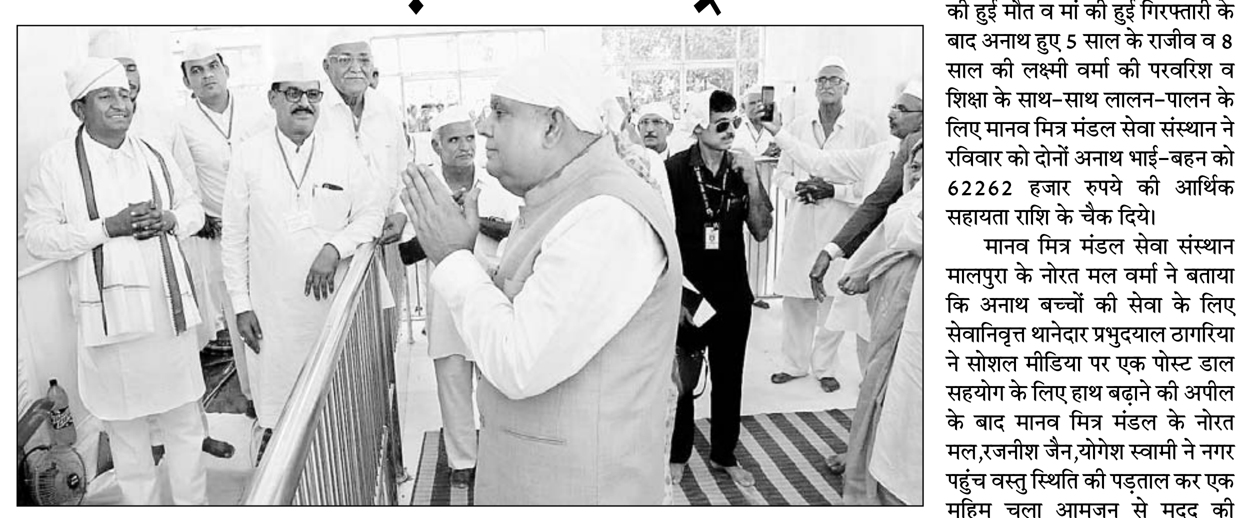

उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ ने मुकाम में गुरु जम्भेश्वर महाराज के समाधि स्थल पर धोक लगाई।

इससे पूर्व उपराष्ट्रपति ने गुरु जम्भेश्वर के समाधि स्थल पर धोक लगाई। उन्होंने चौधरी भजन लाल की प्रतिमा का अनावरण किया। सभा स्थल पर बने मंच का अनावरण और पार्क के सौंदर्यीकरण कार्य का लोकार्पण किया। धर्म सभा के दौरान उपराष्ट्रपति ने प्रतिभाओं का सम्मान किया।

कार्यक्रम में मुकाम पीठाधीश्वर रामानंदाचार्य महाराज, सच्चिदानंद महाराज, भगवान नाथ महाराज, केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, श्रम राज्य मंत्री सुखराम बिश्नोई, एग्रो मार्केटिंग डेवलपमेंट बोर्ड के अध्यक्ष रामेश्वर डूडी, राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत, नोखा विधायक बिहारी लाल बिश्नोई, फलोदी विधायक पब्बा राम बिश्नोई, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक कुलदीप बिश्नोई, राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र बूडानिया सहित जनप्रतिनिधि और देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए बिश्नोई समाज के हजारों लोग मौजूद रहे।

अनाथ बच्चों की आर्थिक सहायता

मालपुरा, (निसं)। पचेवर थाना क्षेत्र के नगर गांव में 20 अगस्त 2022 को हुई एक हृदय विदारक घटना में पिता की हुई मौत व मां की हुई गिरफ्तारी के बाद अनाथ हुए 5 साल के राजीव व 8 साल की लक्ष्मी वर्मा की परवरिश व शिक्षा के साथ-साथ लालन-पालन के लिए मानव मित्र मंडल सेवा संस्थान ने रविवार को दोनों अनाथ भाई-बहन को 62262 हजार रुपये की आर्थिक सहायता राशि के चैक दिये।

मानव मित्र मंडल सेवा संस्थान मालपुरा के नोरत मल वर्मा ने बताया कि अनाथ बच्चों की सेवा के लिए सेवानिवृत्त थानेदार प्रभुदयाल ठागरिया ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट डाल सहयोग के लिए हाथ बढ़ाने की अपील के बाद मानव मित्र मंडल के नोरत मल,रजनीश जैन,योगेश स्वामी ने नगर पहुंच वस्तु स्थिति की पड़ताल कर एक मुहिम चला आमजन से मदद की अपील करते हुए 62262 रूपये की सहायता राशि एकत्रित कर दोनों अनाथ भाई-बहन के नाम चैक बना रविवार को नगर पहुंच कर सरपंच प्रतिनिधि राजू सिंह सहित ग्रामीणों की उपस्थिति में बच्चों के संरक्षक बने प्रभुदयाल ठागरिया को सौंपी गई। संस्थान की इस मुहित व मदद के लिए सरपंच व ग्रामीणों ने आभार जताया। इस दौरान नरेन्द्र फुलवारिया, गोविन्द फुलवारिया, संजय पाराशर आदि मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 26 सितम्बर, 2022

आश्विनी मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, हस्त नक्षत्र मंगलवार प्रातः 6:18 तक, शुक्ल योग प्रातः 8:04 तक, किस्तुघ्न करण दिन 3:17 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से रात्रि 3:09 तक है। आज अग्रसेन जयन्ती है और मातामह श्राद्ध है। आज से शारदीय नवरात्रा आरम्भ होंगे। घट स्थापना का शुभ मुर्हूत प्रातःकाल में 6:21 से प्रातः 7:57 तक का समय श्रेष्ठ है और अभिजित मुर्हूत दिन 11:55 से 12:42 तक भी है और प्रातः 9:19 से 10:49 के मध्य शुभ चौघडिया में भी कर सकते हैं।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:50 तक, शुभ 9:14 से 10:49 तक, चर 1:48 से 3:17 तक, लाभ-अमृत 3:17 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:21, सूर्यास्त 6:16

मेष
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या
मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष और भय बना रहेगा। धार्मिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष और भय बना रहेगा। धार्मिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
धार्मिक/मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है। व्यक्तिगत खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।